P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

रतन कुमार भारद्वाज
आचार्य,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
लाल कोठी योजना,
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रभूदयाल
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मनुष्य के द्वारा जीवन में जो उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं वो पूरे होंगे या नहीं, यह उसके द्वारा किये गये प्रयासों पर निर्भर करता है। आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा संनिहित रहती है। आकांक्षा से यह ज्ञान होता है कि मानव अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा है, इससे केवल यह स्पष्ट होता है कि वह क्या प्राप्त करना चाहता है व उसका लक्ष्य क्या है? माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का उद्देश्य छात्र–छात्राओं को स्वयं की शैक्षिक उपलब्धियों तथा शैक्षिक आकांक्षाओं के अनुकूल स्वस्थ जीवन यापन हेतु आजीविका योग्य बनाना है। इस शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में भिन्नता पायी गयी।

मुख्य शब्द : शैक्षिक आकांक्षा।

प्रस्तावना

शैक्षिक आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा निहित रहती है। शैक्षिक आकांक्षा यह नहीं बतलाती कि विद्यार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कितना सफल रहा ; यह तो केवल इस बात का उल्लेख करती है कि विद्यार्थी क्या प्राप्त करना चाहता है या उसका लक्ष्य क्या है? शैक्षिक आकांक्षाओं को उच्च आदर्श भी कहा जा सकता है; अर्थात् जहाँ तक पहुँचने की हम लालसा रखते हैं, किन्तु जरूरी नहीं कि वे प्राप्त हों। प्रत्येक देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक व्यवस्था के अनुरूप ही शिक्षा व्यवस्था की गई है। प्रत्येक नागरिक की शिक्षा के संबंध में कुछ आकांक्षाएँ होती हैं, जैसे– धर्म, जाति, वर्ण एवं स्थान के भेदभाव के बिना शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा, शिक्षा में अवसरों की समानता इत्यादि।

प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई लालसा या अभिलाषा अवश्य होती है, जो कि उच्च या निम्न स्तर की भी हो सकती है। इसी आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण यथार्थवादी एवं निराशावादी श्रेणी में किया जाता है। किसी व्यक्ति में, किसी भी क्षेत्र में कुछ कर दिखाने या बनने की विद्यमान अभिलाषा को आकांक्षा कहा जाता है; तथा वह व्यक्ति आकांक्षी या महत्त्वाकांक्षी कहलाता है। आकांक्षा और महत्त्वाकांक्षा में कोई विशेष अन्तर नहीं है। आकांक्षा जहाँ लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयत्न है, वहीं महत्त्वाकांक्षा, उससे आगे का एक कदम।

सोरेन्स के अनुसार

'' आकांक्षा स्तर, व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धारण करना है। आकांक्षा स्तर क्षमता व योग्यता तथा पूर्ण सफलता व असफलता से भली भाँति प्रभावित होता है।''

शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कर दिखाने या बनने की अभिलाषा जिस विद्यार्थी में विद्यमान रहती है, उसे शैक्षिक आकांक्षा कहते हैं, परन्तु यह इच्छा या लालसा शैक्षिक क्षेत्र में कितनी मात्रा में है, इससे उस विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा का पता चलता है। शैक्षिक आकांक्षा का अर्थ शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थी की अपनी वर्तमान स्थिति से अपने आप को ऊँचा उठाने की इच्छा अथवा प्रयास से लगाया जाता है।

सही अर्थों में शैक्षिक आकांक्षा वह है जो हम अपने शिक्षा के क्षेत्र में तथा भविष्य में किसी कार्य को इतना अच्छा करने का प्रयास करें कि वह हमारे द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति का साधन बन जाये।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा में भिन्नता प्रतीत होती है। माध्यमिक स्तर उच्च शैक्षिक आकांक्षाओं का आधार होता है, इसी स्तरीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

शोध का उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम शैक्षिक आकांक्षा के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ कुमार, संजीव (2015) ने ''केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्त्व आवश्यकताएँ, मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि'' विषय पर शोध किया और पाया कि केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्त्व आवश्यकताएँ, मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनके लिंग तथा विद्यालय के भौगोलिक परिक्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं है। राय, गीता (2014) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम उत्तराखण्ड राज्य के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षां स्तर और अकादमिक प्रदर्शन पर उन विद्यार्थियों के अभिभावकों के प्रोत्साहन प्रभाव का धनात्मक संबंध प्रदर्शित करते हैं। हेन्सन, जना मैरी (2013) ने अपने अध्ययन ''अंडरस्टैंडिंग ग्रेडूएट स्कूल एस्पाइरेसन्शः द इफैक्ट ऑव गुड टीचिंग प्रैक्टिस'' में पाया कि संबंधित संकाय के शिक्षकों के अच्छे शिक्षण अभ्यास का उनके छात्रों के स्नातक शिक्षा में प्रवेश लेने पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। शर्मा, प्रवीण कुमार (2013) ने ''प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता, सुविधा स्तर, स्व–धारणा व कार्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया और पाया कि शिक्षक प्रभावशीलता की स्व–धारणा एवं कार्यात्मक मूल्यों से सहसंबंध की मात्रा औसत स्तरीय है तथा इसकी प्राथमिक विद्यालयी सुविधा स्तर एवं आकांक्षा स्तर से सहसंबंध की मात्रा निम्न स्तरीय है। एलिस, माइल्स एवं रिचर्ड, लिन्ने (2012) ने अपनी रिपोर्ट ''टीचिंग द वे एस्पायर टू टीचः नाउ एण्ड इन द फ्यूचर'' में बतलाया कि शिक्षक अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं, जैसे–शिक्षण के लिए उत्तेजना ,छात्रों के लिए समर्पण, उनकी देखभाल, अपने छात्रों को जानना तथा उनके व्यावसायिक निर्णय लेने में लचीलापन आदि के बारे में एक मत होते हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया जो कि पूर्व में हुए शोध के परिणामों से पुष्ट होता है; जहाँ शर्मा, राजलक्ष्मी (2011) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में अन्तर उपस्थित है। दास, अरिआनि एवं मिरदाद (2015),मदरासोवा गेकोवा एट ऑल (2010), बाजपेयी, अमिता एवं कन्नौजिया, आरती (2007), पेटर, एस.ली. एवं अन्य (2007), जेनियार्टो (2004), चौधरी, विनिता (2003) ने अपने अध्ययन शैक्षिक आकांक्षा तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा की तुलना पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेशों में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

डॉ. वी.पी.शर्मा तथा डॉ. अनुराधा गुप्ता (2015) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी।

जनसंख्या

राजस्थान राज्य में मा0 शि0 बोर्ड राजस्थान से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त मुस्लिम विद्यार्थी।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में शेखावाटी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 मुस्लिम विद्यार्थियों को; 200 छात्र, तथा 200 छात्राओं को, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. टी–मान

परिकल्पना–1

माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1
(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

मुस्लिम समुदाय	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
छात्र	200	23.6	3.88	0.378	1.07	398	2.83*
छात्राएँ	200	24.67	3.67				

***0.1 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 23.6 व 24.67 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 3.88 व 3.67 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.378 है तथा मध्यमानों का अन्तर 1.07 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.83 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 398 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.59 से अधिक है, अतः दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना –1 को निरस्त किया जाता है।

लेखाचित्र संख्या – 1
माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

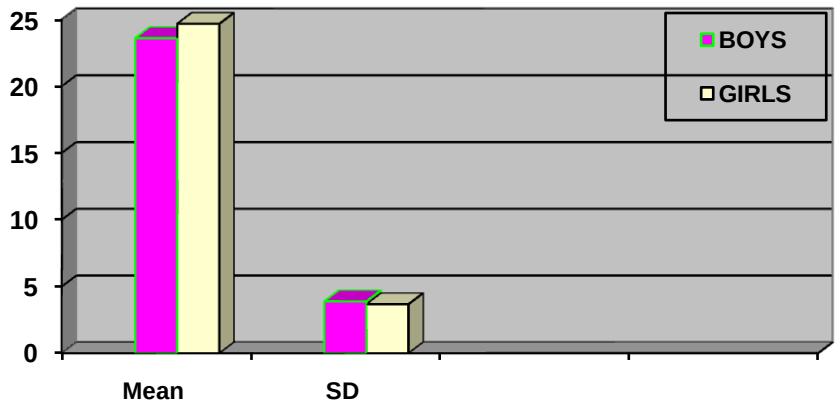

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया, अर्थात् माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में भिन्नता पायी गयी। हालांकि मुस्लिम समुदाय की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (24.67) मुस्लिम समुदाय के छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान (23.6) से अधिक है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश नहीं है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राएँ शैक्षिक आकांक्षा स्तर की दृष्टि से समान नहीं हैं, उनकी शैक्षिक आकांक्षा में विशेष अन्तर उपस्थित है। जिसका कारण मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं के अभिभावकों का उन पर कम ध्यान दे पाना हो सकता है।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर उपस्थित है।

सुझाव

1. मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं के अभिभावकों को इस विषय में सजग करना चाहिए कि उनकी संतान क्या प्राप्त करना चाहती है व उसका लक्ष्य क्या है।
2. मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं हेतु उनकी आकांक्षा स्तर का ध्यान रखते हुए परामर्श कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।

जेनियार्टो (2004), एन इफैक्ट ऑव सोशियो इकोनॉमिक स्टेटस ऑन एजूकेशनल एण्ड वोकेशनल एस्पाइरेशन ऑव यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स, सोशियल साइन्स क्वाटरली, 98(4), 1048–1055।

पीटर, एस.ली. एवं अन्य (2007), एजूकेशनल एसपाइरेशन्स एण्ड पोलिसी इम्प्लीकेशन्सः अ स्टडी ऑव यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स इन वेस्टर्न चाइना, जनरल ऑव हायर एजूकेशन पोलिसी एण्ड मैनेजमेन्ट, 29(2), 143–158।

शर्मा, प्रवीण कुमार (2013), प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता, सुविधा स्तर, स्व–धारणा व कार्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन,पी–एच.डी. शिक्षा विभाग, जैन विश्वविद्यालय, लाडनूँ।

शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

शर्मा, राजलक्ष्मी (2011), स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आकांक्षा, आत्मविश्वास, सेवा अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, डॉक्टरल थीसिस, जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी, लाडनूँ।

हेन्सन, जना मैरी (2013), अंडरस्टैंडिंग ग्रेडूएट स्कूल एस्पाइरेसन्शः द इफैक्ट ऑव गुड टीचिंग प्रैक्टिस, पी–एच.डी. (एजूकेशन) ग्रेजूएट कॉलिज, यूनिवर्सिटी ऑव लोवा, अमेरीका।

Websites

1. *www.eric.ed.gov*
2. *www.scholar.google.com*
3. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*